।। अर्हम् ।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति,श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाष : 01565–224600,224900

ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

आत्मा शरीर बंधन से छूटना चाहती है – आचार्य महाप्रज्ञ

–तुलसीराम चौरड़िया (मीडिया संयोजक)–

श्रीडूँगरगढ़ 10 मार्च : आत्मा शरीर बंधन से छूटना चाहती है। स्वतंत्र रहना चाहती है। प्रत्येक प्राणी की अभिलाषा बंधन मुक्ति की होती है। जब तक पकड़ है तब तक बंधन है, पकड़ को छोड़ा जाता है। कायोत्सर्ग किया जाता है तो बंधन मुक्ति हो जाती है। जो भगवान पार्श्व की पुलकित मन से और एकाग्र होकर भक्ति करता है, स्तुति करता है उसकी अंतिम फलश्रुति बंधन मुक्ति होती है, मोक्ष होती है।

उक्त विचार आचार्य महाप्रज्ञ ने आचार्य सिद्धसेन विरचित कल्याण मंदिर स्तोत्र पर प्रवचनमाला का समापन करते हुए व्यक्त किये। उन्होने कहा कि चन्द्र का अनिमेश ध्यान और स्वयं के प्रतिबिम्ब का ध्यान विशिष्ठ दोनो प्रयोग है। जो प्रतिबिम्ब में एकाग्र हो जाता है या पार्श्व के मुखारविन्द में रम जाता है वह अपने कर्म बंधन को तोड़ देता हैं। इससे पूर्व युवाचार्य महाश्रमण ने गीता एवं उत्तराध्ययन के तुलनात्मक प्रवचन में राजस दान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कान का आभूषण ज्ञान की बात सुनना है और हाथ का आभूषण दान देना है। दान दिये जाने के पीछे कुछ पाने की भावना रखता है तो वह दान राजस् दान की श्रेणी में आ जाता है। जो देने की इच्छा न होने पर भी विवशता वश दान देता है तो वह दान भी राजस दान की श्रेणी में आता है।

स्व. सूरजमल सिंघी की स्मृति सभा आयोजित

बुधवार को प्रवचन कार्यक्रम के दौरान आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में 8 मार्च को दिवगंत सूरजमल सिंघी की स्मृति सभा आयोजित की गई। स्व. सूरजमल सिंघी ने अपने एक पुत्र को मुनि के रुप में और दो पुत्रों को प्रशासनिक सेवाओं के साथ ही धर्मसंध की सेवा में नियोजित किया। इस विशिष्ठ योगदान का उल्लेख करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि सूरजमलजी के पुत्र धर्मसंघ की सेवाओं में लगे हैं। पुत्रों को देखकर अनुमान लगाया जा सकता है कि पिता कितने अच्छे होगें।

आचार्य महाप्रज्ञ ने स्व. सिंघी के एक संसारपक्षीय पुत्र मुनि धनंजय कुमार की सेवाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि इन्होने मेरे साहित्य को जनता तक पहुंचाने में जो योगदान दिया है वह अद्वितीय है। उन्होने प्रशासनिक सेवाओं के साथ धर्मसंघ की सेवा करने वाले स्व. सिंघी के सुपुत्र लालचंद सिंघी एवं माणकचंद सिघी की भी सराहना की।

युवाचार्य महाश्रमण ने स्व. सिंघी के बारे में कहा कि वे भाग्यशाली पिता थे। उन्होने मुनि धनंजय कुमार को गुरुकुल में दिपते संत बताते हुए कहा कि इनका उदारमना व्यवहार है। जो सबके लिए उदाहरणीय है। कुछ मामलों मैं सूरजमल जी के पुत्र उनसे आगे निकल गये हैं। इस मौके पर मुनि धनंजय, कुमार विकास परिषद् के संयोजक लालचंद सिंघी वित्त मंत्रालय में सेवाएं देने वाले अर्थशास्त्री माणकचंद सिंघी ने अपने

क्रमश : 2

दिवगंत पिता के जीवन पर प्रकाश डाला। अरिहंत सिंघी ने गीत के द्वारा अपनी भावनाएं रखी। संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

अणुव्रत शिक्षक संसद् की राष्ट्रीय संगोष्ठी

अणुव्रत एक नैतिक अभियान है। इसे शिक्षा क्षेत्र में प्रभावी बनाने के लिए पिछले 20 वर्षों से अणुव्रत शिक्षक संसद् सतत् प्रयत्न कर रही है। गैर सरकारी स्तर पर छात्रों में नैतिकता का प्रसार करने वाली यह एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय ईकाई है। प्रवास व्यवस्था समिति के मीडिया संयोजक तुलसीराम चौरड़िया ने बताया कि आगामी 12,13,14 मार्च को श्रीडूँगरगढ़ में आचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं युवाचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में अणुव्रत शिक्षक संसद की एक राष्ट्रीय संगोष्ठी बुलाई गयी है। संसद के संयोजक भीकमचंद नखत एवं संरक्षक हीरालाल श्रीमाली की अगुआई में अनेक कार्यकर्ता श्रीडूँगरगढ़ पहुंच गये हैं। पूरे देश से 100–150 शिक्षकों की इस संगोष्ठी में भाग लेने की संभावना है। अणुव्रत प्राध्यापक मुनि सुखलाल इस संगोष्ठी का मार्ग दर्शन कर रहे है। संगोष्ठी में शैक्षिक क्षेत्र से सम्बन्धित समस्याओं पर विचार विमर्श किया जायेगा।

तुलसीराम चौरड़िया
मीडिया संयोजक/सहसंयोजक